केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली

Central Board of Secondary Education, Delhi

Fictitious Roll No.
(To be entered by Board)

(परीक्षार्थी भरें To be filled in by the candidate)

परीक्षार्थी प्रश्न-पत्र के ऊपर लिखे कोड को दर्शाये गये बॉक्स में लिखें
Candidate should write code no. as written on the top of the question paper in this box → 3/2

No. of supplementary answer-book (s) used → Nil

Name of the examination AISSE 2011

Class X th

Subject HINDI-A (002)

Day & Date of the Examination MONDAY, 14/03/2011

Medium of answering the paper HINDI

B D H S C

खण्ड-ग

10. (i). (ख). वहाँ के वासी संगीत के प्रेमी हैं।
(ii). (ख). वहाँ शरीर-त्याग मोक्ष का कारण माना गया है।
(iii). (ग). वह संगीत, साहित्य और संस्कृति की नगरी है।
(iv). (ग). अनुपम शहनाई वादन से काशी को ख्याति दिलाई।
(v). (क). जातिवाचक संज्ञा

11. (क). आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज है। इसके निम्नलिखित कारण हैं:
(i). आग की खोज मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता की पूर्ति करती है। वह खाना पकाने में मुख्य ऊर्जा-स्रोत है।
(ii). आदि मनुष्य ने आग के आविष्कार को सबसे बड़ा आविष्कार माना था।
- शीतोष्ण से रक्षा
- वन्य जीव-जंतुओं से रक्षा
- पेट की भूख को शांत करने की इच्छा
(iii). आज भी आग का महत्व सर्वोपरि है। ~~यदि~~ तभी तो हर सांस्कृतिक कार्यक्रम से पहले दीया जलाया जाता है एवं खेल समारोह में मशाल जलाई जाती है।
(iv). आज के युग में यदि आग न हो तो पूरी मानव सभ्यता ताश के पत्तों की तरह भरभरा कर गिर जाएगी।

(ख). 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ में लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने कुतर्कवादियों के दलीलों को नकारा है और स्त्री शिक्षा का समर्थन किया है :-

(i). स्त्रियों का नाटकों में प्राकृत बोलना उनके अनपढ़ होने के प्रमाण नहीं है। उस जमाने में कुछ ही लोग संस्कृत बोलते या बोल सकते थे। उस जमाने में प्राकृत ही सर्वसाधारण की भाषा थी। प्राकृत में तो सारा बौद्ध, जैन साहित्य कुमारपालचरित आदि महान ग्रंथ लिखे गए हैं। अतः प्राकृत सुशिक्षितों की भाषा थी।

(ii). प्राचीन काल में स्त्री शिक्षा होने के पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं किंतु वे खो भी सकते हैं। अतः पर्याप्त प्रमाणों के अभाव में यह नहीं कहा जा सकता कि प्राचीन काल में स्त्री शिक्षा नहीं थी।

(iii). भारत में वेदमंत्र लिखने से लेकर शास्त्रार्थ, व्याख्यान करने वाली विदुषी स्त्रियाँ हुई हैं जैसे विश्ववरा, अत्रि-पत्नी, गार्गी, मंडन मित्र की पत्नी आदि। अतः प्राचीन नारी को शिक्षा से वंचित नहीं कहा जा सकता।

(iv). तीज के अवसर पर शकुंतला का दुष्यंत को कटु वचन कहना उसकी अशिक्षा का नहीं अपितु उसके स्वाभाविक क्रोध का परिणाम था।

(ग). 'एक कहानी यह भी' पाठ में लेखिका मन्नू भंडारी के पिताजी के व्यक्तित्व के दो कमजोर पहलु थे - (i). विशिष्ट बनाने की इच्छा
(ii). सामाजिक प्रतिष्ठा का लिहाज
वे लेखिका को देश व समाज के प्रति जागरूक बनाकर उसे विशिष्ट बनाना चाहते थे परंतु साथ ही वे उसे एक सामान्य कन्या के रूप में प्रदर्शित करके सामाजिक मान-मर्यादा को कायम रखना चाहते थे। अत: लेखिका का जीवन घर की चारदीवारी तक ही सीमित था।

आज की स्थितियाँ

- आज लड़कियों पर घर-गृहस्थी का बंधान नहीं रह गया है।
- लड़कियाँ शिक्षा से लेकर कामकाज के क्षेत्रों में लड़कों से आगे हैं।
- वे नौकरियों के साथ-साथ राजनीति, समाज सेवा एवं व्यवसाय में भी सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं।
- खेलकूद से लेकर विज्ञान तक वे बरीक ठीक ऊँचे स्थान पर पहुँच रही हैं।

(घ). फादर बुल्के का हिंदी प्रेम निम्नलिखित ~~परिवर्तन~~ बिंबों से प्रकट होता है :-

- फादर बुल्के ने हिंदी सीखी ही नहीं, अपितु अंग्रेजी हिंदी का सबसे अधिक ~~प्र~~ प्रामाणिक शब्द-कोश तैयार किया। बाइबिल, ब्लू बर्ड का हिंदी में अनुवाद किया।
- उन्होंने इलाहाबाद से हिंदी में एम.ए किया।
- उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय में रामकथा के उत्पत्ति और विकास पर शोध प्रबंध लिखा।
- उन्होंने 'परिमल' संस्था में महत्वपूर्ण योगदान दी।
- उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए खूब प्रयास किए।

(ङ). काशी में होने वाले निम्नलिखित परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते हैं :-

(i). खान-पान की परंपराओं / विशेषताओं का लुप्त होना। (कुलसुम कचौड़ी, मलाई बरफ)

(ii). अब काशी में संगीत, साहित्य और अदब का वैसा मान नहीं रहा।

(iii). अब हिंदू-मुस्लिम एकता नहीं रही।

(iv). अब संगीतकारों के लिए गायकों के मन में वैसा मान नहीं रहा।

बिस्मिल्ला खाँ के अनुसार उपर्युक्त विवर्तन निम्न रूप से हानिकारक हैं :

(i). काशी की परंपराएँ लुप्त हो जाएँगी।

(ii). सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिलेगा।

(iii). काशी की संगीत-कला नष्ट हो जाएगी।

अतः बिस्मिल्ला खाँ इन परिवर्तनों से व्यथित हैं।

12 (क). कवि के अनुसार धन-वैभव, यश-मान - सब मिथ्या हैं। इनमें मनुष्य को प्रसन्न करने की शक्ति नहीं है। मनुष्य इनके पीछे जितना दौड़ता है, वह उतना ही भटकता है। अतः कवि ने धन-वैभव, यश-मान के अंधानुकरण को 'भरमाने' का कारण बताया है।

(ख). 'प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है'

आशय : कवि के अनुसार, प्रभुता का सुख, बड़प्पन का अहसास भी एक छलावा ही है। बड़ा आदमी होकर भी मनुष्य सुखी रहे, यह आवश्यक नहीं। हर सुख के साथ एक दुख भी जुड़ा रहता है। जैसे- हर पूर्णिमा के पश्चात अमावस आती है।

(ग). कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात कही है क्योंकि यही सत्य है। मनुष्य को आखिरकार अपने वास्तविक सच का सामना करना पड़ता है। उसे अपनी परिस्थितियों में जीना पड़ता है।

13. (क). राम के स्वभाव की विशेषताएँ

(i). राम विनयी और सरल थे। जब परशुराम ने क्रोधपूर्वक शिव धनुष तोड़ने वाले का नाम पूछा तो उन्होंने स्वयं को उनका दास बताया।

(ii). राम मृदुभाषी थे। लक्ष्मण और परशुराम के कटु वार्तालाप के बीच उन्होंने शीतल जल के समान शांत करने वाले वचन कहे।

(iii). राम अत्यंत धैर्यवान थे। उन्होंने लक्ष्मण के प्रति परशुराम के क्रोध को धैर्यपूर्वक सहन कर लिया और उनका प्रतिवाद नहीं किया।

लक्ष्मण के स्वभाव की विशेषताएँ

(i). लक्ष्मण ~~बाकपटु~~ उग्र एवं प्रचंड थे। उनमें क्रोध की अग्नि भड़क रही थी।

(ii) लक्ष्मण तर्कशील स्वभाव के थे। उन्होंने परशुराम के साथ अपने वार्तालाप के दौरान तरह-तरह के तर्क प्रस्तुत किए।

(iii). लक्ष्मण बुद्धिमान थे। तभी तो वे कभी परशुराम पर व्यंग्य कर देते तो कभी उनकी प्रशंसा करके उनका अपमान कर देते थे।

(ख). कवि के अनुसार, फसलें पानी, मिट्टी, धूप, हवा और मानव श्रम के मेल से बनती हैं।

- इनमें सभी नदियों के पानी का जादू समाया है।
- इनमें सभी प्रकार की मिट्टी का गुण-धर्म निहित है।
- इनमें लाख-लाख, कोटि-कोटि मजदूरों व किसानों का परिश्रम है।
- इनमें सूरज एवं पानी का भी प्रभाव समाया हुआ है।

(ग). 'संगतकार' कविता सम्मान से वंचित सहायकों के महत्त्व पर प्रकाश डालती है।

- संगतकार मुख्य कलाकार व कर्मचारी के महत्त्व को बढ़ाने में अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं।
- वे मुख्य कलाकार की कमी को छिपाकर, उसकी पूर्ति करके उसकी गरिमा को बनाए रखते हैं।
- वे मुख्य कलाकार के अकेलेपन के अहसास को दूर करते हैं तथा ~~विष~~ विषम परिस्थितियों में उसकी सहायता करते हैं।
- मुख्य व्यक्ति के कार्य को सफल व प्रभावी बनाने के लिए संगतकार की भूमिका अनिवार्य है

(4) भारत की आज़ादी के आंदोलन में देश के सभी वर्गों व धर्मों के लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। प्रस्तुत पाठ 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा' भी टुन्नू एवं दुलारी के मूक योगदान को रेखांकित करती है :-

(i). जब विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के लिए जुलूस निकाला गया तो दुलारी ने लंकाशायर तथा मैंचेस्टर के मिलों में बनी मखमली किनारी वाली सूत की धोतियों को त्यागा।

(ii). टुन्नू भी उस जुलूस में शामिल था जो विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के लिए निकाला गया था।

(iii). टुन्नू भी दुलारी को उपहार में देने के लिए स्वदेशी वस्त्र ही लाता है।

(iv) अंत में टुन्नू को देश की खातिर अपनी जान गँवानी पड़ी।

15. (क).

आँखों-देखी बाढ़

प्रकृति का तांडव:- यह सन् 1975 की बात है। उड़ीसा के एक बेहद खूबसूरत शहर बालासोर में मैं अपनी छुट्टियों पर गया था। हमारे परिवार में सभी हर्षो-उल्लास से त्यौहार मना रहे थे तभी अचानक बादलों का जमघट उत्तर-पूर्वी दिशा से गाँव को आच्छादित कर गया। तत्पश्चात भारी वर्षा शुरू हुई एवं बिजली की चमक एवं-बादलों की गड़गड़ाहट से वातावरण में एक अद्भुत सन्नाटा फैल गया। 24 घंटों के मूसलाधार बारिश के बाद महानदी पूरे ऊफान पर था। धीरे-धीरे सभी गाँववासियों ने देखा कि नदी अपने स्वाभाविक जल-स्तर से कई गुना ज्यादा ऊपर चढ़ चुका था। 25 मीटर की उस विशालकाय जल राक्षस के सामने जो कुछ आया, उसे बड़ी निर्ममता से उसने उठाकर बहा दिया। पहली बार प्रकृति के उस भयानक स्वरूप को देखकर मैं दंग रह गया।

पानी का प्रलय:- लगभग आधे घंटे में पूरा गाँव बाढ़ के चपेट में आ चुका था। हर दिशा में केवल पानी-ही-पानी। बाढ़ के उस कालरूपी तांडव में किसी ने अपने स्वामी को खो दिया, किसी के आँचल से उसका संतान दूर हो गया था तो किसी ~~के~~ ~~क~~ बहन से उसका

प्रिय भाई बिछड़ गया। सचमुच उन दृश्यों ने मेरे मनोबल को तोड़ दिया एवं मेरा हृदय पानी पर बहते मृत शरीरों को देखकर काँप उठा।

बाढ़ के बाद उत्पन्न स्थितियाँ :- चार दिनों बाद जब सब कुछ स्वाभाविक हो गया तो लगा कि हमें पुनर्जन्म मिला है। परंतु उसके बाद भी लोगों में भय और आतंक की छवि साफ देखी जा सकती थी। किसी का बसेरा उजड़ गया था तो किसी की फसल नष्ट हो गई थी।

आखिरी शब्द :- 1975 के उस बाढ़ को याद करने पर मेरा रोम-रोम काँप उठता है। मैंने उसे एक बुरे सपने की भाँति भुलाना चाहा किंतु उस अनुभूति ने मुझे हमेशा अपने स्पर्श में बाँधकर रखा हुआ है।

16. सचिन चुटकुले
परीक्षा केंद्र, बड़माल
14-03-2011

प्रिय युवराज,
स्नेह!
आशा है, तुम सानंद होगे एवं तुम्हारी पढ़ाई भली-भाँति चल रही होगी। मैं भी यहाँ कुशल हूँ। माँ-पापा तुम्हें आशीर्वाद भेज रहे हैं।

प्रिय युवराज! जबसे तुम छात्रावास में गए हो मुझे सदैव तुम्हारी चिंता रहती है। एक बड़े भाई होने के नाते मैं तुम्हें कहना चाहता हूँ तुम्हें अपने मित्रों का चुनाव सावधानी से करना चाहिए। तुम्हें सदैव मित्र के चुनाव के लिए समानता को मापदंड बनाना होगा। मित्र और तुम्हारे आर्थिक ~~स्थि~~ स्थिति में अधिक अंतर होनी चाहिए और न ही वह तुमसे अधिक शक्तिशाली होना चाहिए। वह केवल अपनी स्वार्थ सिद्धि करने की बजाय तुम्हारी भावनाओं को भी समझना चाहिए। तुम्हें इस बात का ध्यान रखना होगा कि क्या वह तुम्हारा हितैषी है? क्या वह तुम्हें सन्मार्ग में चलने की प्रेरणा देता है और क्या वह विपत्तियों में तुम्हारा साथ देता है?

प्रिय युवराज, एक सच्चा मित्र सफलता की कुँजी होती है, वह जीवन की एक संचित उर्जा होती है। तभी तो कहा जाता है कि:
"सच्चा प्रेम दुर्लभ है एवं सच्ची मित्रता उससे भी अधिक दुर्लभ"।

अतः मेरा आग्रह है कि तुम अपने मित्रों का चुनाव सावधानीपूर्वक करो। भगवान से यही प्रार्थना है कि वे तुम्हें दीर्घायु करें, स्वस्थ रखें एवं उन्नति के पथ पर अग्रसर करें।

तुम्हारा ~~ब~~ भाई
सचिन चुटकुले

5. (i). (ख). संयुक्त वाक्य
(ii). (ग). जो ईमानदार है, वही इस सम्मान का अधिकारी है।
(iii). (क). मैंने उसे नियमित पढ़ने के लिए कहा लेकिन उसने अनसुनी कर दी।
(iv). (ग). सरल वाक्य

6. (i). (घ). विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन
(ii). (ख). अकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन, उत्तम पुरुष
(iii). (ख). क्रिया-विशेषण, कालवाचक, 'घूमने जाता हूँ' का विशेषण
(iv). (ख). अनिश्चयवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग

7. (i). (ख). जहाँ कर्ता प्रधान होता है
(ii). (ग). तुम शोर क्यों मचाते हो
(iii). (ग). आइए, चला जाए।
(iv). (ग). यह पुस्तक दो दिन में पढ़ी जा सकती है।

(iii). (ख). बाढ़-पीड़ितों में खाद्य सामग्री बाँटी जा रही है।
(iv). (घ). क्या तुमसे इतनी देर बैठा जाएगा?

8. (i). (घ). मैं मंदिर जाऊँगा और तब भोजन करूँगा।
(ii). (क). संज्ञा
(iii). (घ). तुम्हारे द्वारा अच्छी चाल चली गई।
(iv). (घ). उपमा

9. (i). (ग). अनुप्रास
(ii). (घ). यमक
(iii). (ग). चरणकमल बन्दौं हरिराई।
(iv). (क). मर्मवेदना

खण्ड-क

1. (i). (घ). सभी भेदभावों को भूलकर देश में एकता बनाए रखना।
(ii). (घ). स्वार्थ त्याग कर देश के हित की चिंता।
(iii). (ग). धर्म, भाषा और क्षेत्रीयता की भावना के कारण
(iv). (घ). सांप्रदायिक अलगाव, द्वेष और घृणा के कारण
(v). (क). राष्ट्रीय एकता

2. (i). (घ). भारत में बसे आर्यों में भिन्नता पैदा होने के बाद
(ii) (घ). जातिगत पक्षपात न होने देना
(iii). (घ). राष्ट्रवाद को जन्म देने के लिए
(iv). (ग). जातिवाद की समस्या
(v). (ग). भाववाचक संज्ञा

3. (i). (ग). देश की सुरक्षा के लिए रात-दिन सावधान रहना
(ii) (ख). हम रक्षा के लिए बाँहें उठाएँ
(iii). (ग). अनुप्रास
(iv). (क). देश के कोने-कोने में क्रांति होना
(v). (ग). जो विश्वासघाती हैं

4. (i). (ख). असफलता की चिंता किए बिना लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं
(ii). (ग). जीवन में ऊँचा लक्ष्य
(iii). (ग). जिनके बलिदान को लोगों ने भुला दिया है।
(iv). (ख). असमय निधन
(v). (घ). रूपक